Name of the college-> APSM College Barauni
Deptt-> Economics
Date-> 7.4.2021
Designation-> [GT]
Class - B.A Part 2.
Paper-> 2nd

Name of the topic-> [Importance of Agriculture in Indian Economy]

हरित क्रांति - [Green Revolution]

-> हरित क्रांति - उन्नत किस्म के बीजो उर्वरको कीटनाशको के प्रयोग द्वारा कृषि उत्पादकता में होने वाली वृद्धि के संदर्भ में 'हरित क्रांति' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1968 में अमेरिका वैज्ञानिक डॉ० विलियम गौड के द्वारा किया गया। भारत में हरित क्रांति का श्रेय नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अमेरिका कृषि वैज्ञानिक डॉ० नॉर्मन ई० बोरलॉग को दिया जाता है। भारत में हरित क्रांति के क्षेत्र में डॉ० एम० एस० स्वामीनाथन का योगदान भी अति महत्वपूर्ण रहा है। भारत के संदर्भ में हरित क्रांति से अभिप्राय कृषि उत्पादन में हुई उस तीव्र वृद्धि से है, जो ऊँची उपज वाले बीजों एवं रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों, कृषि यंत्रीकरण, बेहतर सिंचाई प्रणाली एवं नई तकनीकों के फलस्वरूप हुई। 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट की समस्या के समाधान हेतु 1966-67 में मैक्सिको से लाए गए गेहूँ एवं धान की अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग किया गया जिससे पहले की तुलना में प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन अधिक मात्रा में होना प्रारंभ हो गया। देश को खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य को ध्यान में रखकर वर्ष 1966-67 में कृषि क्षेत्र में विकास के लिये नई कृषि रणनीति अपनाई गई।

Scanned with CamScanner

इसके तहत बड़े पैमाने पर अधिक उपज देने वाले उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग आरंभ हुआ। इन उन्नत किस्म के बीजों से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा दिया गया। भारत में हरितक्रांति की शुरूआत 1966 में खरीफ की फसल से हुई। इसके साथ ही सघन कृषि कार्यक्रमों को अपनाया गया। इनके अतिरिक्त कृषि क्षेत्र में अनुसंधान एवं प्रशिक्षण, लघु सिंचाई कार्यक्रम एवं भूमि संरक्षण जैसे उपाय किये गए। इन उपायों के परिणामस्वरूप भारत के पश्चिमोत्तर भाग: हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तरप्रदेश इत्यादि में गेहूँ और चावल के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई। इसे ही भारतीय कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति का नाम दिया गया। आज भारत खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भर हो गया है।

⇒ हरित क्रांति के घटक-

(i) उन्नत किस्म के बीज
(ii) रासायनिक उर्वरक
(iii) रासायनिक कीटनाशक एवं खरपतवार नाशक
(iv) बेहतर सिंचाई प्रणाली
(v) बेहतर साख सुविधाएँ
(vi) बेहतर भंडारण सुविधाएँ
(vii) बेहतर विपणन एवं वितरण सुविधाएँ

⇒ लेकिन भारत में हरितक्रांति का लाभ कुछ ही क्षेत्रों तक सीमित रहा। इससे क्षेत्रीय असंतुलन को बढ़ावा मिला। इसी के साथ हरितक्रांति का सर्वाधिक प्रभाव गेहूँ के उत्पादन पर पड़ा।

Scanned with CamScanner

इस में काफी वृद्धि हुई। लेकिन इस अनुपात में अन्य फसलों के उत्पादन में कोई वृद्धि नहीं हुई। इस से कृषि प्राप्त बिगड़ गया। अत्यधिक रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हुई।

देश की बढ़ती हुई जनसंख्या एवं बढ़ते हुए नगरीकरण के कारण कृषि क्षेत्र में दूसरी हरित क्रांति की आवश्यकता महसूस की गई। कृषि क्षेत्र के समग्र विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कृषि क्षेत्र में आई स्थिरता को दूर करने, क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से वर्ष 2006 के विज्ञान-कॉग्रेस में ए० पी० जे० अब्दुल कलाम ने द्वितीय हरित क्रांति का आह्वान किया।

द्वितीय हरितक्रांति की संकल्पना के दायरे को व्यापक बनाया गया। यह संपूर्ण कृषि क्रियाओं से संबंधित है जैसे- खाद्यान्न फसलें, व्यापारिक फसलें, पशुपालन, मत्स्यपालन इत्यादि।

इसमें रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक का प्रयोग, जल, कृषिभूमि एवं पर्यावरण संरक्षण पर विशेष बल एवं संकुचित फसल प्रारूप को बनाए रखने पर जोर दिया गया है।